

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3040

शुक्रवार, 6 दिसम्बर, 2019 को उत्तर दिए जाने के लिए

तटरेखा अपरदन संबंधी तटीय अनुसंधान

3040. श्री राम मोहन नायडू किंजरापु:

प्रो० अच्युतानंद सामंत:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) देश में तटरेखा अपरदन और तटीय संवेदनशीलता संबंधी तटीय अनुसंधान में की गई प्रगति का ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि तटीय अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार भारत में 33 प्रतिशत तटीय अपरदन हुआ है जिससे भूजल का संदूषण, लोगों का विस्थापन, आजीविका की हानि और इससे जुड़े कई अन्य नुकसान हुए हैं;
- (ग) यदि हां, तो क्या सरकार की तटीय अपरदन रोकने और तटीय पारिस्थितिकीय तंत्र की सुरक्षा के लिए अपनी जलवायु परिवर्तन संबंधी कार्य योजना के अन्तर्गत कार्रवाई करने की मंशा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
- (घ) क्या देश में समुद्र स्थिति पूर्वानुमान और मौसम पूर्वानुमान के लिए अपेक्षित अग्रिम प्रौद्योगिकी है; और
- (ङ) तटीय आंध्र प्रदेश हेतु समुद्र स्थिति पूर्वानुमान और उपयोग किए जा रहे मौसम पूर्वानुमान उपकरणों और उनकी सटीकता का ब्यौरा क्या है

उत्तर

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(डॉ. हर्ष वर्धन)

- (क) जी हाँ। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) के संबद्ध कार्यालय राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (एनसीसीआर) ने तटरेखा क्षरण से संबंधित मुद्दों को समझने के लिए भारतीय तट पर विभिन्न स्थानों पर तटरेखा प्रबंधन, तूफानी लहरों की मॉडलिंग, सुनामी की मॉडलिंग और सुभेद्यता मानचित्रण से संबंधित अनुसंधान किया है। भारतीय तट पर सबसे सुभेद्य स्थलों पर तटीय कटाव और ज्वारीय इनलेट्स के बंद होने के कारणों का अध्ययन किया गया और तटीय सुरक्षा के लिए 16 स्थल विशिष्ट तटरेखा/इनलेट प्रबंधन योजनाएं तैयार की गईं। वर्ष 1990-2016 की अवधि में हुए तटरेखापरिवर्तन के मानचित्र 1:25000 के पैमाने पर तैयार कर लिए गए हैं और इन्हें सूचनार्थ तटीय राज्यों को प्रसारित कर दिया गया है। तमिलनाडु तट के मुख्य स्थलों के तटीय सुभेद्यता सूचकांक (सीवीआई) मानचित्रण का काम प्रारम्भ कर दिया गया है।

- (ख) एनसीसीआर ने पिछले 26 वर्षों की अवधि (1990-2016) के मुख्य भूमि के लगभग 6632 किमी. लंबी तटरेखा के आंकड़ों का विश्लेषण किया है और यह देखा गया है कि मुख्य भूमि के लगभग 2247 किमी. लंबे तट (34%) पर निम्न, मध्यम और उच्च श्रेणी का कटाव हो रहा है। एनसीसीआर के अध्ययन में भूजल संदूषण, लोगों के विस्थापन, भारत के सम्पूर्ण तट पर आजीविका के नुकसान आदि पर तटीय क्षरण के प्रभाव का आकलन नहीं किया गया है।
- (ग) जी हाँ। पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने तटीय क्षेत्रों में मछुआरा समुदायों और अन्य स्थानीय समुदायों की आजीविका सुरक्षा के अलावा तटीय क्षेत्रों और समुद्री क्षेत्रों के अद्वितीय पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षा के लिए तटीय विनियमन क्षेत्र (सीआरजेड), 2019 अधिसूचना जारी की है। नेशनल एक्शन प्लान ऑन क्लाइमेट चेंज (एनएपीसीसी) के अन्तर्गत तटीय कटाव को रोकने और तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों की सुरक्षा के लिए कोई विशेष मिशन विद्यमान नहीं है।
- (घ) जी हाँ।
- (ङ) आंध्र प्रदेश को प्रदान किया जा रहा समुद्र दशा पूर्वानुमान और मौसम पूर्वानुमान संख्यात्मक मॉडलों और उच्च कार्य-निष्पादन कम्प्यूटिंग (एचपीसी) प्रणालियों पर आधारित होता है। समुद्र दशा पूर्वानुमान औसतन 85-90% तक सटीक होते हैं जबकि सुनामी की तूफानी लहरों के पूर्वानुमान 90% तक सटीक होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय समूहों द्वारा स्वीकार की गई सटीकता 70% है। हाल के वर्षों में चक्रवात पूर्वानुमान की सटीकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप जनहानि में भारी गिरावट हुई है। उदाहरण के लिए, पिछले पांच वर्षों (2013-17) में 24, 48 और 60 घंटे की लीड अवधि में क्रमशः 42.3, 94.8 और 115.4 किमी. की औसत त्रुटियों की तुलना में वर्ष 2018 में आए तितली चक्रवात के संबंध में 24, 48 और 60 घंटे की लीड अवधि में चक्रवात भूदर्श पूर्वानुमान त्रुटियों में क्रमशः 15.6, 15.6 और 46.7 किमी. का सुधार हुआ है। पिछले पाँच वर्षों (2013-17) के दौरान चक्रवात के पथ के पूर्वानुमान में 24, 48 और 72 घंटे की लीड अवधि में क्रमशः 93, 144 और 201 किमी. की औसत त्रुटियों की तुलना में इस चक्रवात के संबंध में 24, 48 और 72 घंटे की लीड अवधि में क्रमशः 98, 114 और 113 किमी. की पथ पूर्वानुमान त्रुटि हुई है।
